Vol 4 Issue 5 Nov 2014 ISSN No :2231-5063

# International Multidisciplinary Research Journal

# Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

**Welcome to GRT**

**RNI MAHMUL/2011/38595** **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

## *International Advisory Board*

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

## *Editorial Board*

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

**Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India**
**Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org**

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Impact Factor : 2.2052(UIF)
Volume-4 | Issue-5 | Nov-2014
Available online at www.aygrt.isrj.org

# राजस्थान : ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

*सुनील कुमार वर्मा*

***सारांश :-*** अभिवृद्वि केन्द्रों का विकास पृष्ठीय प्रवाह पर निर्भर करता है। गंग नहर, इन्दिरा गाँधी नहर व भाखड़ा नहर के द्वारा सिचांई विकास से फसल उत्पादन में वृद्धि तथा उत्पादनों का मण्डी कस्बों तक परिवहन, पशुपालन एवं परिवहन साधनों के विकास से आर्थिक क्रियाओं में परिवर्तन हुआ है। प्राप्त आय का निवेश अन्य द्वितीयक व्यवसायों में किया गया है। इससे मरूस्थल के इस अध्ययन क्षेत्र में नये अधिवासों के विकास में सहायता मिलती है।

***प्रस्तावनाः—***

***ऐतिहासिक पृष्ठभूमि***

ऋग्वेद के प्रारम्भिक सूक्तों में वैदिक कालीन तीन नदियों सरस्वती, द्रिशाद्वति और शताद्ररू का अनेक बार उल्लेख किया गया है। इसमें सरस्वती या सप्तशी मुख्य और पूर्वी नदी मानी गई हैं। ऋग्वेद में सरस्वती नदी की अवस्थिति यमुना और सतलज नदियों के मध्य बताई गयी है। शोधार्थियों द्वारा भारतीय धार्मिक पुस्तकों में उघ्द्रित सरस्वती नदी की पहचान हरियाणा और राजस्थान की वर्तमान घग्घर की शुष्क घाटी से की गई है। यह पवित्र पावन नदी अपनी सहायक नदियों के साथ तत्कालीन बीकानेर राज्य में प्रवाहित होती थी। यह माना जाता है कि वैदिक कालीन जलवायु उष्ण व आर्द्र थी। ईसा से ४०० वर्ष पूर्व में भी यह थार मरूस्थल वनों से आच्छादित क्षेत्र था। वैदिक काल की पवित्र उपजाऊ नदी घाटी धीरे-धीरे शुष्कता में वृद्धि और दक्षिणी-पश्चिमी हवाओं द्वारा बालू जमाव से शुष्क घाटी में परिवर्तित हो गयी। बालू के बढ़ते जमाव ने इस क्षेत्र को मरूभूमि में परिवर्तित कर दिया।सरस्वती नदी की घाटियाँ पुरातत्व की दृष्टि से अति महत्वपूर्ण हैं और इनका कालिक और सांस्कृतिक मूल्य अत्यधिक है। इस सम्बन्ध में किये गये अन्वेषण कार्य हड़प्पा काल (२३०० ई. पू से १७५० ई. पू)से वर्तमान तक के भारतीय इतिहास का उल्लेख प्रस्तुत करते हैं।वर्ष १९१७-१९१९ तक डॉ. एल. पी. टैस्सीटोरी ने प्राचीन सरस्वती (हाकड़ा) नदी की शुष्क घाटी का अन्वेषण कार्य किया। इन्होंने मिट्टी के ढ़ेर (स्थानिय थेड या थेडी ) में टूटे हुये मिट्टी बर्तन पाये, जिन्हें प्राचीन यौहडेय जाति के शमशान स्थलों के रूप में माना। बाद में सर ऑरेलस्टेन (१९४१) द्वारा किये गये अन्वेषण कार्यों से सरस्वती नदी की शुष्क घाटी में कई पूर्व ऐतिहासिक स्थलों की खोज हुई। स्टेन के अनुसार यह क्षेत्र महान सभ्यता का क्षेत्र था।

*परिशिष्ट 3.1*
*इन्दिरा गाँधी नहर की सामान्य विशेषताएं*

| Ø- l- | fooj.k | bdkbZ | iFke pj.k | f}rh; pj.k | ;kx |
|---|---|---|---|---|---|
| 1- | e[; ugj dh yEckbZ | fdeh- | | | |
| | bfUnjk xk/kh ugj | | 204 | & | 204 |
| | bfUnjk xk/kh ugj | | 189 | 256 | 445 |
| | ;kx | | 393 | 256 | 649 |
| 2- | fooj.k i.kkyh dh yEckbZ | fdeh- | | | |
| | iokg {k= | | 2743 | 2825 | 5568 |
| | tykRFkku {k= | | 332 | 1975 | 2307 |
| | ;kx | | 3075 | 4800 | 7875 |
| 3- | —f"k ;ksX; flfpr {k= | Ykk[k gDV;j | | | |
| | iokg {k= | | 4-79 | 7-00 | 11-79 |
| | tykRFkku {k= | | 0-46 | 3-12 | 3-58 |
| | ;kx | | 5-25 | 10-12 | 15-37 |
| 4- | 1- flpkbZ {kerk | Ykk[k gDV;j | 5-78 | 8-10 | 13-89 |
| | 2- fuekZ.k dk; dh ykxr | djkM :i; | 225 | 1420 | 1675 |
| | 3- okf"kZd [kk?k mRiknu | Ykk[k Vu | 14-5 | 22-5 | 37-00 |
| | 4- vk?kkfxd rFkk i;Zty | ?kuQV@l- | & | & | 1200 |
| | 5- okf"kZd ykHk | 37 ykk[k Vu [kk?kkUUk mRiknu<br>03 ykk[k Vu 0;kikfjd Qly mRiknu<br>60 ykk[k Vu pkjk mRiknu<br>5100 djkM :i; dk eRL; mRiknu | | | |

स्त्रोतः इन्दिरा गाँधी नहर मण्डल, जयपुर, २००२

***मध्यकाल से वर्तमान तक***

१०वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में जांगलदेश कन्नौज साम्राज्य का उपेक्षित सीमान्त था। लेकिन यह भाग सिन्धु और गंगा के मध्य मार्गों का क्षेत्र रहा। प्रारम्भ में यह छोटी ढ़ाणी के रूप में विकसित हुआ जिसे रामनगर कहा जाता था जिसमें कुछ ग्रामीण अधिवास पाये जाते हैं। प्रारम्भ में प्रतिकूल भौगोलिक परिस्थितियों से इस ढ़ाणी का विकास सीमित स्तर पर ही हुआ। लेकिन १९२७ में महाराजा गंगासिंह द्वारा गंग नहर का निर्माण करने से गंगानगर की स्थापना हुआ। प्रारम्भ में नगर का बसाव गंगनहर के समीपवर्ती व सिंचाई क्षेत्रों तक ही सीमित था लेकिन धीरे-धीरे इसका फैलाव बाहर की ओर होने लगा। इन्दिरा गाँधी नहर के निर्माण तथा आधारभूत सुविधाओं के विकास से अध्ययन क्षेत्र में नियोजित अधिवास केन्द्रों का विकास प्रारम्भ हुआ।

***अधिवास विकास***

अध्ययन क्षेत्र में जनसंख्या वितरण और अधिवास प्रक्रम जल उपलब्धता से सह-सम्बन्धित है। वर्षा की मात्रा और भूमिगत जल की गहराई ने अधिवासों की सघनता को निश्चित किया है। अधिवास घनत्व में वर्षा की मात्रा में बढ़ोतरी और धरातल के समीप भूमिगत जल की उपलब्धता से वृद्धि होती है। यद्यपि श्रीगंगानगर जिला मरूस्थलीय भू-भाग है, लेकिन क्षेत्र की करणपुर, पदमपुर, सादुलशहर और गंगानगर तहसीलों में अधिवास घनत्व अधिक है। अध्ययन क्षेत्र में गंगनहर और इन्दिरा गाँधी नहर द्वारा सिंचाई से नवीन और नियोजित विकास से एक विशेष प्रकार के अधिवास प्रक्रम का उद्‌भव हुआ है।

### श्रीगंगानगर जिलाः साधनों के अनुसार विशुद्ध सिंचित क्षेत्र
### (वर्ष 2004–05 से 2008–09)
### (हैक्टेयर में)

| o"k | d,@V;coy | Rkkykc | ugj | vU; lk/ku | dy {k= |
|---|---|---|---|---|---|
| 2004&05 | 844 ¼0-14½ | & | 578739 ¼99-86½ | & | 579583 ¼100-00½ |
| 2005&06 | 885 ¼0-16½ | & | 543427 ¼99-84½ | & | 554312 ¼100-00½ |
| 2006&07 | 933 ¼0-17½ | & | 523146 ¼99-83½ | & | 524079 ¼100-00½ |
| 2007&08 | 933 ¼0-18½ | & | 523240 ¼99-82½ | & | 524173 ¼100-00½ |
| 2008&09 | 985 ¼0-20½ | & | 490955 ¼99-79½ | 59 ¼0-01½ | 491999 ¼100-00½ |

स्त्रोतः कोष्ठक में कुल क्षेत्र का प्रतिशत दिया गया है।
स्त्रोतः जिला सांख्यिकीय रूपरेखा २०१०, जिला श्रीगंगानगर, आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, राजस्थान, जयपुर, अगस्त २०१०.

### *असिंचित क्षेत्र में अधिवास विकास*

असिंचित क्षेत्र के अधिवास मरू पारिस्थितिकी में बिखरे हुये पाये जाते हैं। ऐसे अधिवास छोटे और गतिहीन हैं। इनमें आर्थिक विकास का कोई ऐसा प्रभावी कारक नहीं पाया जाता है जो इन अधिवासों के विकास को गति दे सके। ये प्राकृतिक रूप से वृद्धिरत अधिवास क्षेत्र हैं। अध्ययन क्षेत्र में जहाँ भूमिगत जल स्तर अपेक्षाकृत ऊँचा है, वहाँ पर अधिवासों का घनत्व अधिक पाया जाता है।

श्रीगंगानगर जिले में कुल २८३० आबाद गांवों में से ४२५ गांव घडसाना तहसील में हैं। इनमें से ६८.५६ प्रतिशत गांवों का आकार २००० से कम है। अनूपगढ़ तहसील में २००० से कम जनसंख्या के ६८.७४ प्रतिशत गांव तथा सम्पूर्ण अध्ययन क्षेत्र में ऐसे गांवों का प्रतिशत ६६.७१ है। गांव दूर-दूर स्थित हैं और इनकी आर्थिक क्रियाऐं मानसून आधारित कृषि और घुमक्कड पशुपालन पर आधारित हैं।

### *नहर सिंचाई वाले क्षेत्रों में अधिवास विकास*

आकार, कार्य, समान समुदाय, अर्थव्यवस्था, सामाजिक जीवन, सुरक्षा आदि को ध्यान में रखते हुए गंग नहर और इन्दिरा गाँधी नहर क्षेत्र में नवीन अधिवास के लिये तीन स्तरीय नियोजन किया जाता है। इसका उद्देश्य सिंचाई सम्भाव्यता का उपयोग कर कृषि उत्पादकता में वृद्धि, कृषि उत्पादनों की बिक्री, उपभोक्ता वस्तुओं की प्राप्ति, जीवन दशाओं में सुधार के लिये सामाजिक सेवाएं आदि का एक क्रमबद्ध जाल विकसित कर अधिकतम लाभ प्राप्त किया जाता है। अध्ययन क्षेत्र के नहरी सिंचित क्षेत्र में स्थायी मानव अधिवास पदानुक्रमित संरचना विकसित की गयी है। इसके लिये क्रिस्टालर (१६३३) के षट्कोणीय सिद्धान्त को आधार रूप में लिया गया है।

### *आधार गांव (आबादी केन्द्र)*

पदानुक्रम की इस सबसे छोटी इकाई (आबादी केन्द्र) के अन्तर्गत १००० जनसंख्या के सामाजिक एवं प्राथमिक सुविधाओं के लिये नियोजन किया गया है। इनमें प्राथमिक विद्यालय, प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र, पेयजल, दैनिक उपयोग की वस्तुओं के लिये १० से १२ खुदरा दुकानें, गांव की ईंधन आवश्यकता के

लिये नर्सरी आदि प्रमुख हैं (चित्र ३.१ व ३.२)। इस प्रकार के गांव का विकास एक चक के मध्य यथासम्भव अनुपजाऊ या टिब्बा भूमि पर किया गया है, जिससे किसान को आबादी केन्द्र से कार्यस्थल (चक/खेत) तक २.५ किलोमीटर से अधिक दूरी तय नहीं करनी पड़े। एक आबादी केन्द्र में १००० हैक्टेयर सिंचित (१६०० हैक्टेयर कुल कृषि कमाण्ड क्षेत्र) क्षेत्र रखा गया है। अधिवास के लिये ६ मुरब्बा (६२.५ हैक्टेयर) भूमि रखी गयी है, जिस पर जनसंख्या घनत्व १६ से १८ व्यक्ति प्रति एकड होगा। योजना कमीशन ने सभी सामाजिक मूल्यों को लेते हुए एक आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था के आबादी गांव के लिये २०० परिवारों की जनसंख्या का आधार लिया है। समुदाय की आर्थिक और सामाजिक संरचना के स्थायित्व के लिये इस जनसंख्या को अनुकूल माना गया।

### *सुविधापूर्ण गांव (कृषि सेवा केन्द्र)*

आधार गांव और मण्डी कस्बा (अभिवृद्धि केन्द्र) के मध्य कृषि सेवा केन्द्र के लिये नियोजन किया गया है। यह आबादी गांव से आकार स्वरूप और कार्यों में बड़ा रखा गया है। यह अपने क्षेत्र के ६ से ७ आबादी गांवों की जनसंख्या की तत्कालीन आवश्यकताओं और सेवाओं की पूर्ति करेगा। एक कृषि सेवा केन्द्र में ४००० से ६००० जनसख्या के लिये नियोजन किया गया है। यह केन्द्र अपने चारों ओर स्थित १२००० जनसंख्या को सेवाएं प्रदान करेगा। इसका प्रभाव क्षेत्र ६.५ से ७ किलोमीटर रखा गया है, जिसमें ७००० हैक्टेयर सिंचित क्षेत्र (१०००० हैक्टेयर कुल

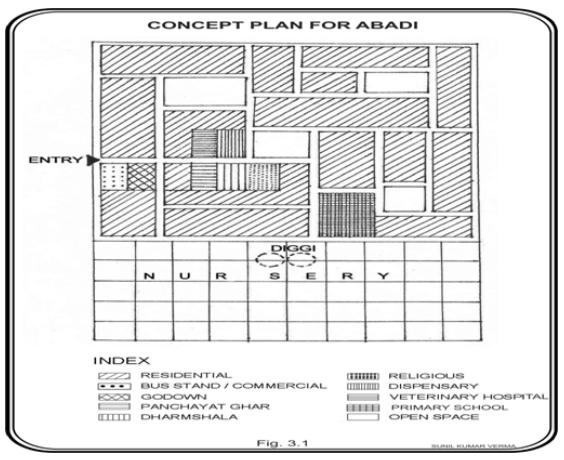


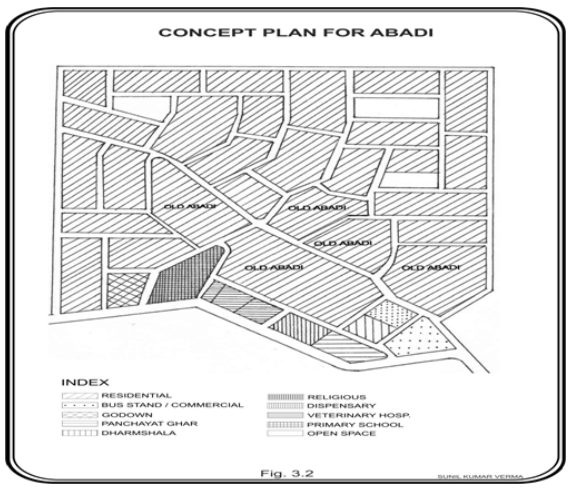

कृषि क्षेत्र) सम्मिलित किया गया है। इसकी अवस्थिति इस प्रकार निश्चित की गयी है कि यह केन्द्रीय स्थिति रखते हुए अपने चारों ओर स्थित ६ आबादी गांवों को सेवा प्रदान कर सके। एक कृषि सेवा केन्द्र की आबादी के लिए १६ मुरब्बा (२५० एकड) भूमि रखी गयी है। यहाँ किसान की आवश्यकता की पूर्ति के लिये उन्नत बीज, उर्वरक, कीटनाशक, दवाईयाँ, कृषि मशीनरी मरम्मत तथा विशेषीकृत कृषि सलाह सेवा उपलब्ध होगी। इनके अतिरिक्त पशु चिकित्सालय, माध्यमिक या उच्च माध्यमिक विद्यालय, खुदरा दुकानें, कृषि यंत्रों की मरम्मत, डीजल पम्प, बीज खाद की दुकानें, कृषि उपज मण्डी, बैंक शाखा, आटा मिल, सहकारी गोदाम एवं पंचायत घर आदि की व्यवस्था की जायेगी (चित्र ३.३ व ३.४)।

### *बाजार या मण्डी कस्बा (अभिवृद्धि केन्द्र)*

यह उपप्रदेश का व्यापार और वाणिज्य का केन्द्र है। एक मण्डी कस्बा ६ से ७ कृषि सेवा केन्द्रों तथा ४० से ५० आबादी केन्द्रों को कस्बा स्तरीय सेवा प्रदान करता है। इनका नियोजन इस प्रकार किया गया है कि यह अपने चारों ओर के आधार गांवों से ३० से ३५ किलोमीटर से अधिक दूरी पर स्थित नहीं हों। इनकी अवस्थिति और सेवारत पृष्ठ प्रदेश के अनुसार १०००० से ५०००० जनसंख्या के लिये मास्टर प्लान तैयार किये गये हैं। इनकी स्थिति के लिये पूर्व स्थित गांव केन्द्र या कस्बों का चयन किया गया है, जिससे बाजार केन्द्रों की तीव्र वृद्धि के लिये प्रारम्भिक भौगोलिक लाभ प्राप्त हो सके। बाजार केन्द्रों को राज्य मार्गों के नाभिक बिन्दु के रूप में विकसित किया गया है। इससे ये केन्द्र अपनी पृष्ठभूमि की सेवा के साथ उच्च श्रेणी के पदानुक्रम केन्द्र से भी सेवायें प्राप्त कर सकेंगे। इन्हें अभिवृद्धि केन्द्रों के रूप में पहचान दी गयी है। यहाँ प्रस्तावित सार्वजनिक सुविधाओं में एक नियमित बाजार, औद्योगिक कार्यों के लिए भूमि, गोदाम, बैंक सुविधाऐं, चिकित्सालय, उच्च माध्यमिक स्तर की शिक्षा, पशु चिकित्सालय, डाक व तारघर, कृषि मशीनरी की मरम्मत आदि प्रमुख हैं। इनमें से अधिकांश सुविधाऐं इन केन्द्रों पर प्रदान की जा चुकी है (चित्र ३.५)। विजयनगर, पदमपुर, रायसिंहनगर, सादुलशहर,

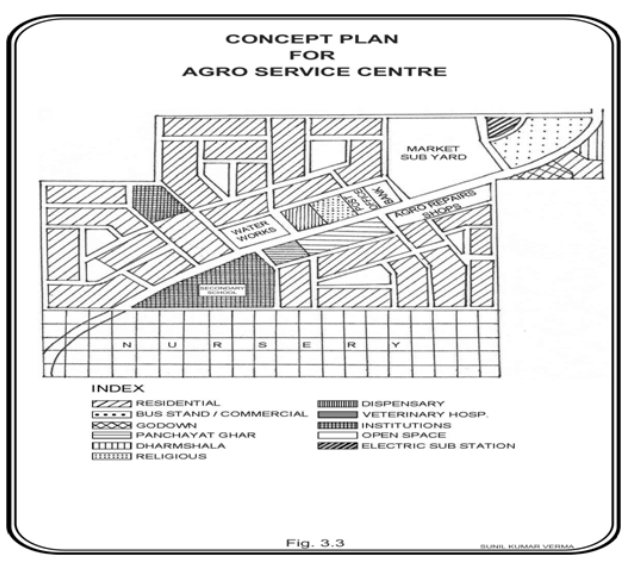

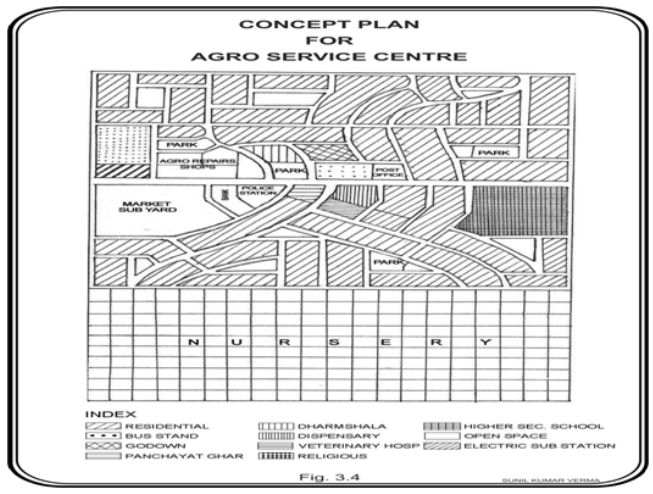


केसरीसिंहपुर, गजसिंहपुर, लालगढ़ इस प्रकार के विकास कार्यों से अभिवृद्धि केन्द्र के रूप में विकसित हो रहे हैं। सूरतगढ़ और अनूपगढ़ मण्डी केन्द्र कस्बे सिंचित क्षेत्र के बाहर नहर कमाण्ड क्षेत्र की परिधि पर स्थित है। इन कस्बों में सुव्यवस्थित बाजार, व्यापार, उद्योग आदि की सुविधाऐं उपलब्ध हैं। नहर सिंचित क्षेत्र के अतिरेक उत्पादनों के लिये ये उपयुक्त बाजार केन्द्र हैं। इन केन्द्रों की अभिवृद्धि ने नहर सिंचित क्षेत्र को भी प्रभावित किया है। गंगानगर प्रादेशिक महत्व का नगर है।

### *सामाजिक एवं आर्थिक कारक*

कृषि भूमि उपयोग को भौतिक कारकों की अपेक्षा सामाजिक एवं आर्थिक कारक अधिक प्रभावित करते हैं। नहरी सिंचाई के विकास ने अध्ययन क्षेत्र के भूमि उपयोग को प्रभावित किया है। यद्यपि वर्ष १९९८ से २००३ तक निरन्तर अकाल और सूखे की स्थिति में गांवों और अभिवृद्धि केन्द्रों की विकास प्रक्रिया को भी प्रभावित किया है। अध्ययन क्षेत्र में निम्नलिखित कारक अधिक प्रभावी रहे हैं–

***श्रीगंगानगर जिलाः साधनों के अनुसार कुल सिंचित क्षेत्र***
***(वर्ष 2004–05 से 2008–09)***
***(हैक्टेयर में)***

| o"k | d,@V;coy | rkykc | ugj | vU; Ik/ku | dy {k=Qy |
|---|---|---|---|---|---|
| 2004&05 | 1372<br>¼0-16½ | & | 860074<br>¼99-84½ | & | 861446<br>¼100-00½ |
| 2005&06 | 1345<br>¼0-18½ | & | 757950<br>¼99-82½ | & | 759295<br>¼100-00½ |
| 2006&07 | 1070<br>¼0-13½ | & | 818561<br>¼99-87½ | & | 819631<br>¼100-00½ |
| 2007&08 | 2170<br>¼0-33½ | & | 647343<br>¼99-67½ | & | 649515<br>¼100-00½ |
| 2008&09 | 3424<br>¼0-46½ | & | 737870<br>¼99-53½ | 59<br>¼0-008½ | 741353<br>¼100-00½ |

नोटः कोष्ठक में कुल क्षेत्र का प्रतिशत दिया गया है।
स्त्रोतः जिला सांख्यिकीय रूपरेखा, २०१०, जिला श्रीगंगानगर आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, राजस्थान, जयपुर, अगस्त २०१०.

### भूमि की मुरब्बा बन्दी

नहरी सिंचाई के विकास से पूर्व अध्ययन क्षेत्र का पश्चिमी भाग असमतल बालुका स्तूपों से युक्त लगभग जनशून्य क्षेत्र था। सिंचाई विकास और उपनिवेशन विभाग की स्थापना से कृषि योग्य भूमि को भूमिहीनों को आवंटित किया गया है। इसके लिये समान आकार के ६.३२ हैक्टेयर (२५ बीघा/एक मुरब्बा) क्षेत्र में भूमि का विभाजन किया गया है। भूमि को इस प्रकार सुव्यवस्थित करने से उनका अधिकतम उपयोग सम्भव हुआ है। कृषि कार्य के लिये लोगों को आबादी केन्द्रों पर बसने के लिये भी प्रोत्साहित किया गया है।

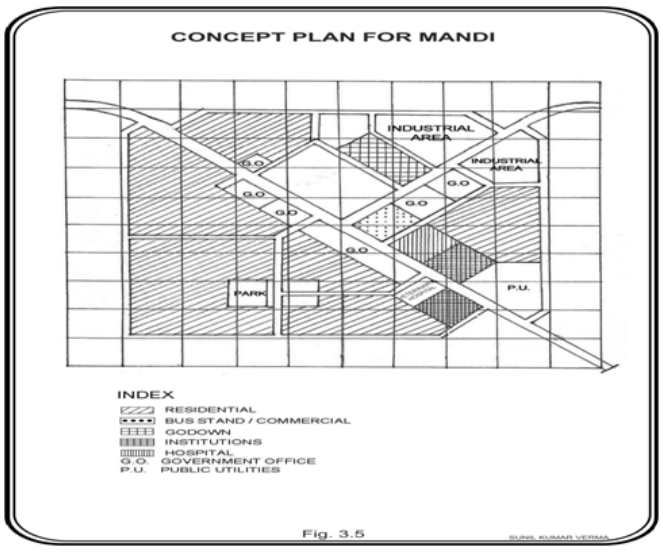

Fig. 3.5

### यातायात मार्गों एवं कृषि केन्द्रों का विकास

सिंचित क्षेत्र में नयी आबादियों को पदानुक्रम की सभी उच्च श्रेणियों के साथ सड़क मार्ग से जोडा गया है (चित्र ३.११)। इससे कृषि उत्पादनों को पृष्ठभूमि से मण्डियों तक लाने मे सहायता मिली है। किसानों की दैनिक आवश्यकताओं की वस्तुओं तथा कृषि इनपुट की खरीद के लिये कृषि सेवा केन्द्रों और मण्डी कस्बों का विकास किया गया है।

## REFERENCES:

1.Aurousseau, M. (1924), Recent Contributions to Urban Geography, Geographical Review, Vol. 14
2.Bear, G.L. (1976), Can Third World Cities Cop; Population Bulletin, Vol. 31
3.Joshi, R.L. (2005), Urban Geography, Rajasthan Hindi Granth Academy, Jaipur
4.Kanskee, K.J. (1963), Structure of Transportation Network : Relationship Between Network Geometry & Regional Characteristics, Department of Geography University of Chicago
5.Kaushik, S.D. (2007), Urban Geography, Rastogi Publications, Gangotri, Shivajee Road, Meerut
6.Khatri, V.K. (2001), Functional Landscape & Tendency of Urbanization in Bikaner, Unpublished Ph. D. Thesis, Dept. of Geography Rajasthan University, Jaipur.
7.Outline Regional Plan, 2001, Indira Gandhi Canal Region, Town Planning Department, Govt. of Rajasthan, Jaipur.

8.Socio-Economic Statistics, 2008-09, Rajasthan, Economic & Statistics Directorate, Planning Building Jaipur, 2009 of Office District Collector, Sriganganagar

# Publish Research Article
# International Level Multidisciplinary Research Journal
# For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

## Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

## Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org